

उलझन में भी ओ बाबा संतोष कर रहे है भजन लिरिक्स



उलझन में भी ओ बाबा,
संतोष कर रहे है,
तेरा हाथ पीठ पर हम,
महसूस कर रहे है,
उलझन में भी ओ बाबा,
संतोष कर रहे है।bd।

तर्ज - दुनिया ने दिल दुखाया।

सुनसान ये डगर है,
फिर भी हमें ना डर है,
हमें ये खबर है गिरधर,
तू भी ना बेखबर है,
जिस ओर भी बढे हम,
बेखौफ़ बढ रहे है,
उलझन में भी ओ बाबा,
संतोष कर रहे है।bd।

हमें रोकने को आई,
यूँ तो हज़ार आंधी,
आई चली गई वो,
छू ना सकी ज़रा भी,
विपदाएं पीछे खींचे,
हम रोज़ बढ रहे है,
उलझन में भी ओ बाबा,
संतोष कर रहे है।bd।

ये ना कहेंगे मुश्किल,
राहों में ना मिली है,
पर श्याम की कृपा ये,
मुश्किल से भी बड़ी है,
'गोलू' खुशी को पाने,
ग़म ये गुज़र रहे है,
उलझन में भी ओ बाबा,
संतोष कर रहे है।bd।



उलझन में भी ओ बाबा,
संतोष कर रहे है,
तेरा हाथ पीठ पर हम,
महसूस कर रहे है,
उलझन में भी ओ बाबा,
संतोष कर रहे है।

Singer – Vivek Sharma
